विस्तृत प्रतिवेदन

हिन्दी दिवस समारोह

14 सितम्बर 2024

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी
आईयूसीटीई कैंपस, सुंदर बगिया, नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, September, 2024

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronics or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet, Varanasi.

निदेशक की कलम से

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं है वरन् यह भारतीय जन-मानस की आत्मा है। एक भाव, संस्कार और दर्शन है। यह वह माध्यम है, जिससे भारतवर्ष ने अपनी संस्कृति, ज्ञान, लोकवाणी और परंपरा को पीढ़ी दर पीढ़ी संजोया है। 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया जाना न केवल भाषिक निर्णय था अपितु राष्ट्रीय आत्मगौरव का बोध भी था।

इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी द्वारा "अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा" विषय पर आयोजित यह संगोष्ठी निःसंदेह अति प्रासंगिक और प्रेरणास्पद है। आज हिन्दी न केवल भारत में, बल्कि विश्व के अनेक देशों में भी अपनाई जा रही है। हिन्दी की डिजिटल और तकनीकी उपस्थिति ने इसे वैश्विक संचार का एक सशक्त माध्यम बना दिया है।

आज आवश्यकता है कि हम हिन्दी को नवाचार, अनुसंधान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा भी बनाएं। उच्च शिक्षा संस्थानों में हिन्दी माध्यम में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन-अध्यापन को बढ़ावा देकर हम हिन्दी को ज्ञान-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर विशेष बल देने की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

मैं इस आयोजन से जुड़े समस्त आयोजकों, विद्वानों और सुधीजनों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह आयोजन हिन्दी की वैश्विक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करेगा।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

हिन्दी दिवस एक ऐसा पर्व है जो हमें हमारी भाषिक अस्मिता, सांस्कृतिक धरोहर और भावनात्मक एकता की स्मृति कराता है। हिन्दी केवल शब्दों का समूह नहीं है, यह एक जीवनशैली है जो हमारी सोच, अनुभव और अभिव्यक्ति का मूल आधार है।

इस वर्ष केन्द्र द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी का विषय "अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा" अत्यंत उपयुक्त और समयोचित है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में हिन्दी ने अनेक सीमाओं को लांघते हुए विश्वपटल पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। आज हिन्दी भाषा सिनेमा, संगीत, सोशल मीडिया, अनुवाद, तकनीकी सामग्री और शैक्षिक विमर्श का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और भाषा-केंद्रों में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ रही है। विदेशी छात्र हिन्दी सीखने में रुचि दिखा रहे हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दी अब 'राजभाषा' भर नहीं, अपितु 'वैश्विक भाषा' बनने की ओर अग्रसर है।

इस अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम हिन्दी को आधुनिक संदर्भों में भी प्रासंगिक बनाए रखें जैसे, तकनीकी लेखन, वैज्ञानिक संप्रेषण और अंतर्राष्ट्रीय शोध विमर्श में हिन्दी की सशक्त भागीदारी।

मैं इस आयोजन हेतु समर्पित सभी सहयोगियों, वक्ताओं और शोधकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि यह आयोजन हिन्दी को एक नये वैश्विक आयाम की ओर प्रेरित करेगा।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	कार्यक्रम के बारे में	1
2.	अतिथि परिचय	2
3.	विस्तृत रूप में कार्यक्रम	3-9
4.	समाचार पत्रों में	10
5.	आयोजन समिति	11
6.	कार्यक्रम की झलकियाँ	12

कार्यक्रम के बारे में

हिन्दी दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिन हिन्दी भाषा के महत्व, उसकी ऐतिहासिक यात्रा और उसके विकास को सम्मानित करने के लिए समर्पित है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी महत्वपूर्ण घटना की स्मृति में हर वर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, जिसे लगभग 44% भारतीय अपनी पहली भाषा के रूप में बोलते हैं। हिन्दी ने देश की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक विविधता को जोड़ने में अहम भूमिका निभाई है। साहित्य, कविता, फिल्म, संगीत और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी इसका योगदान अतुलनीय है।

आज के वैश्विक युग में अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के बावजूद हिन्दी की प्रासंगिकता और आवश्यकता बनी हुई है। हिन्दी दिवस हमें अपनी मातृभाषा के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित करता है। यह न केवल भाषा का उत्सव है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक है।

इसी क्रम में अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी में हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं मुख्य अतिथि/मुख्य वक्ता के रूप में हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका डॉ. नीरजा माधव की महनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्र के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की। इस समारोह का मुख्य विषय "अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा" था। इस आयोजन में देश के विशिष्ट शिक्षाविदों एवं प्रबुद्ध अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिसने कार्यक्रम को अत्यंत सारगर्भित एवं प्रेरणादायी बना दिया।

अतिथि परिचय

प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय

प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान विभाग को अकादमिक उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। प्रो. पाण्डेय न केवल एक विद्वान शिक्षक हैं, बल्कि उन्होंने साहित्यिक शोध एवं रचनात्मक लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित पत्रिका 'प्रज्ञा' के मानद मुख्य सम्पादक रहे हैं, जिसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनके निर्देशन में अनेक शोधार्थियों ने पी-एच.डी. एवं एम.फिल. जैसी उपाधियाँ प्राप्त कीं, जिससे विभाग की शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि हुई। प्रो. पाण्डेय ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेकर हिन्दी भाषा और साहित्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर प्रो. पाण्डेय ने हिन्दी जगत में अभूतपूर्व कार्य किया है। प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय का योगदान हिन्दी शिक्षा जगत में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे न केवल विश्वविद्यालय, बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी साहित्यिक समाज लाभान्वित हुआ है।

डॉ. नीरजा माधव

डॉ. नीरजा माधव समकालीन हिन्दी साहित्य की एक प्रतिष्ठित लेखिका हैं। शैक्षिक योग्यता के क्रम में इन्होंने बी.एच.यू., वाराणसी से अंग्रेज़ी में एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. माधव ने उपन्यास, कहानी, कविता और निबंध विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'यमदीप', 'गेशे जम्पा', 'अवर्ण महिला कॉन्स्टेबल की डायरी' और 'देनपा: तिब्बत की डायरी' शामिल हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों जैसे किन्नर और तिब्बती शरणार्थियों के जीवन और संघर्ष को उजागर करते हैं। डॉ. माधव की रचनाएँ कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित हैं। उन्हें 'नारी शक्ति पुरस्कार', 'यशपाल पुरस्कार', 'मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार' सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में वे आकाशवाणी में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की सदस्य भी हैं। डॉ. नीरजा माधव का साहित्य सामाजिक सरोकारों, संवेदनशीलता और बदलाव की प्रेरणा का स्रोत है, जिससे हिन्दी साहित्य को नई दिशा मिली है।

विस्तृत रूप में कार्यक्रम

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रो. आशीष श्रीवास्तव, संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध, अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, वाराणसी ने कहा कि आज का यह अवसर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है और इस अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

इस अवसर पर एक ऐतिहासिक घटना का स्मरण करते हुए कहा कि 6 मार्च 1915 को जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे, तब उनकी पहली भेंट गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर से हुई। गांधी जी शांति निकेतन की स्वच्छता की स्थिति देखकर स्वयं सफाई करने में जुट गए। यह प्रेरणादायक घटना थी, परंतु हमने इसे मात्र एक परंपरा बना दिया और हर वर्ष 10 मार्च को सफाई अभियान चलाने लगे जबकि पूरे वर्ष सफाई की स्थिति उपेक्षित रही। इसलिए हिन्दी दिवस को एक औपचारिकता मात्र न बनाकर इस पर हमें विचार करना होगा।

साथ ही उन्होंने कहा कि नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी का हिन्दी भाषा के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, इसे किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। किंतु वर्तमान में इस संस्था को कई अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य करने की आवश्यकता है। साहित्यकार रामचंद्र शुक्ल जी के योगदान को याद करते हुए कहा कि आज हिन्दी के संरक्षण और संवर्धन के लिए ठोस कदम उठाने की कितनी आवश्यकता है। हमें यह अवसर केवल एक उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि एक संकल्प के रूप में लेना चाहिए। कथनी और करनी में भिन्नता नहीं होनी चाहिए।

हमें पूँजीवादी ताकतों से सावधान रहते हुए भाषायी विविधता को एक महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में लेना होगा। आज अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भी हिन्दी की स्थिति को मजबूत करने पर काम करते रहना होगा। वर्ष 1964-66 के शिक्षा आयोग में कॉमन स्कूल सिस्टम की सिफारिश की गई थी, जिसे बाद की नीतियों ने समर्थन दिया, परंतु इसकी स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। इसका प्रमुख कारण यह है कि निहित स्वार्थ वाले तत्व हमेशा प्रभावी रहे हैं। इनसे बचने और हिन्दी को एक सशक्त भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए हमें

निरंतर प्रयासरत रहना होगा। हमें केवल औपचारिकताएँ निभाने के बजाय हिन्दी को अपने जीवन का अभिन्न

अंग बनाना होगा।

अतः हमें अपने उत्तरदायित्व को पूरी निष्ठा और आत्मसमर्पण के साथ निभाना चाहिए ताकि हिन्दी केवल एक दिवस तक सीमित न रहकर हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का एक सशक्त स्तंभ बन सके।

प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय

अपने उद्बोधन का प्रारम्भ करते हुये प्रो.पाण्डेय ने कहा की सर्वप्रथम मैं सभी हिन्दी प्रेमी सज्जनों का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने मुझे इस अवसर पर आप सबके बीच अपने विचार साझा करने का अवसर प्रदान

किया। हिन्दी के संदर्भ में चर्चा करना, उसकी उपलब्धियों और चुनौतियों पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी ने आज बहुत प्रगति कर ली है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसका प्रभाव बढ़ा है। वर्तमान में विदेशों के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पठन-पाठन हो रहा है और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् से हर वर्ष कई अध्यापक हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु विदेश जाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया है। किंतु जब हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात आई तो कुछ नीति-निर्माताओं की उदासीनता के कारण इसे राजभाषा तक

सीमित कर दिया गया। संविधान में 15 वर्षों तक अंग्रेजी को सहायक भाषा के रूप में बनाए रखने का निर्णय लिया गया और फिर इसे बार-बार आगे बढ़ाया गया। दक्षिण भारत में हिन्दी विरोधी आंदोलनों के कारण सरकार को 1967 में एक अधिनियम बनाना पड़ा, जिसके अनुसार हिन्दी तब तक राजभाषा बनी रहेगी जब तक सभी राज्यों की विधानसभाएँ इसे बहुमत से पारित नहीं कर देतीं।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में साहित्य की बड़ी भूमिका रही है, लेकिन दक्षिण भारत में हिन्दी को उत्तर भारत की सांस्कृतिक चेतना के रूप में देखे जाने से विरोध बढ़ा। विद्वानों ने सुझाव दिया कि हिन्दी साहित्य के बजाय हिन्दी भाषा के पठन-पाठन पर ध्यान दिया जाए, जिससे व्यावहारिक दृष्टि से भाषा का प्रसार हो। आज हिन्दी केवल साहित्य तक सीमित नहीं रह सकती, बल्कि इसे रोजगार से जोड़ना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना विकसित हुई, जिसमें पत्रकारिता, प्रशासन, विज्ञान, तकनीकी, कंप्यूटर तथा अन्य क्षेत्रों में हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा दिया गया।

तकनीकी शब्दावली विकसित करने के लिए हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली में व्यापक कार्य हुए, किंतु अनुवादित पुस्तकों का समुचित उपयोग नहीं हुआ। हिन्दी को रोज़गारपरक बनाने के लिए कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सिनेमा और अन्य क्षेत्रों में इसे विकसित करने की आवश्यकता है। पटकथा लेखन, अनुवाद तथा वैज्ञानिक शोधों में हिन्दी की व्यापक सम्भावनायें है जिसे हमें पहचानने की जरूरत है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को स्थायित्व तभी मिलेगा जब यह रोज़गार, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान तीनों क्षेत्रों में समृद्ध होगी। प्राचीन काल में संस्कृत इन तीनों आवश्यकताओं को पूरा करती थी और वर्तमान में अंग्रेज़ी इस भूमिका में है। हिन्दी को भी इस दिशा में आगे बढ़ाना होगा और हिन्दी भाषा को व्यावहारिक रूप से उपयोग में लाने से ही उसका सही विकास संभव है।

अतः हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। हमें अपने-अपने क्षेत्रों में हिन्दी में लेखन और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि हम हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी और रोजगार के अनुकूल बना पाए तो यह न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाएगी।

डॉ. नीरजा माधव

डॉ. नीरजा माधव ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दी दिवस को केवल औपचारिकता तक सीमित न रखने की

आवश्यकता पर जोर देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हिन्दी दिवस को केवल भाषण और विचार-विमर्श तक सीमित न रखकर हमें हिन्दी के वास्तविक उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। वर्तमान में, हिन्दी को उसके उचित स्थान पर नहीं रखा गया है, जबकि हमारे समाज और प्रशासन में अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है।

डॉ. नीरजा माधव ने हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दी ने राष्ट्र को एकजुट किया था। महात्मा गांधी ने भी इसे राष्ट्र की भाषा माना था और क्रांतिकारी साहित्य ने स्वतंत्रता सेनानियों में जोश भरने का कार्य किया था। लेकिन आज़ादी के बाद हिन्दी को उचित स्थान नहीं दिया गया और अंग्रेजी को प्रशासनिक और कानूनी भाषा बना दिया गया। उन्होंने संविधान में "इंडिया दैट इज भारत" लिखने को भी एक बड़ी त्रुटि बताया, जिससे हिन्दी को हाशिए पर डाल दिया गया।

विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने की कोशिशें जारी हैं, लेकिन अब तक सफलता नहीं मिली। इसका कारण यह है कि हिन्दी अभी तक भारत की आधिकारिक राष्ट्रभाषा नहीं बनी है, जबकि अन्य देशों ने अपनी भाषाओं को प्राथमिकता दी है। इंडोनेशिया, रूस, जापान और तुर्की जैसे देशों ने अपनी भाषाओं को राष्ट्रीय और प्रशासनिक भाषा बनाकर तकनीकी प्रगति भी की। डॉ. नीरजा माधव ने चीन में अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वहां के लोग अंग्रेजी के बजाय मंदारिन को प्राथमिकता देते हैं, जिससे उनकी भाषा और संस्कृति मजबूत बनी हुई है।

हिन्दी भाषा की दुर्दशा का एक प्रमुख कारण इसकी शिक्षा और प्रचार-प्रसार में की जा रही गलतियां भी हैं। अनुवाद की समस्याओं, शब्दावली की जटिलताओं और कृत्रिम मानक हिन्दी ने इसे कठिन बना दिया है। उदाहरण के रूप में, "फेडर" और "कंसोल" जैसे तकनीकी शब्दों का अनुचित हिन्दी अनुवाद किया जाता है, जिससे भाषा बोझिल हो जाती है। इसके अलावा, "आंटी" शब्द के प्रयोग से रिश्तों के वास्तविक अर्थ खो गए हैं, और चंद्रबिंदु व अनुस्वार के अनुचित प्रयोग से उच्चारण में भी भ्रम उत्पन्न हो रहा है।

उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी को भी जिम्मेदार ठहराया और कहा कि अगर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू चाहते, तो हिन्दी को उसी समय राजभाषा और राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता था। हिन्दी को किस्तों में लागू करने की नीति विफल रही है, जिससे आज भी हिन्दी को पूरा सम्मान नहीं मिल पाया है। इसके विपरीत, अन्य देशों ने अपनी भाषा को ही प्राथमिकता देकर उसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार्यता दिलाई है।

अंत में उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमें हिन्दी के लिए संकल्प लेना चाहिए और इसे अपने घरों, कार्यस्थलों तथा प्रशासनिक कार्यों में प्राथमिकता देनी चाहिए। जब तक हम अपनी भाषा को स्वयं सम्मान नहीं देंगे, तब तक इसे वैश्विक स्तर पर उचित स्थान नहीं मिल पाएगा।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि हम हिन्दी के प्रति रुढ़िवादी होते जा रहे हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि यदि हम बार-बार स्मरण न करें, तो यह भाषा उपेक्षित हो जाएगी। हिन्दी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थान दिलाने के लिए कठोर निर्णयों की आवश्यकता है, जैसे इतिहास में कई देशों ने अपनी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु उठाए थे।

हिन्दी आज भी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा नहीं बन पाई है, जिसका मुख्य कारण यह है कि हिन्दी केवल राजभाषा है, राष्ट्रभाषा नहीं। संविधान की आठवीं अनुसूची में समाहित भाषाओं की संख्या समय के साथ बढ़ी है, लेकिन हिन्दी को उसका वास्तविक स्थान नहीं मिला। विजयवाड़ा में एक पुस्तक 'राष्ट्र भाषा

विहीन राष्ट्र' के लेखक जस्टिस गोपाल राव की दृष्टि से यह विषय और भी गंभीर प्रतीत होता है। जब उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश को यह लिखना पड़े, तो यह गहन चिंता का विषय बन जाता है।

विगत अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि दक्षिण भारत में हिन्दी का विरोध आम जनता का नहीं, बल्कि राजनैतिक है। गांधी जी ने भी हिन्दी को देश को जोड़ने वाली भाषा के रूप में प्रचारित किया था। हिन्दी और हिन्दी भाषियों के प्रति जो भ्रांतियां प्रचलित हैं, वे राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित हैं, जबकि सच्चाई यह है कि दक्षिण भारत में कई लोग अपनी संतानों का नाम झांसी लक्ष्मीबाई रखते हैं, जो हिन्दी के प्रति उनकी स्वीकृति को दर्शाता है।

हमारे शिक्षण संस्थानों में भी हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। कई महान साहित्यकारों और वैज्ञानिकों को मुख्यधारा से अलग कर दिया गया, जिससे भाषाई असमानता बढ़ी। हिन्दी में विज्ञान और शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। अतीत में संस्कृत ने विज्ञान को अभिव्यक्त करने का कार्य किया, लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में हिन्दी माध्यम को उपेक्षित कर दिया गया।

हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना होगा और भाषा के स्तर पर कार्य करने के साथ-साथ अपनी जड़ों को भी तलाशना होगा। भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के लिए मानसिकता को परिवर्तित करना अनिवार्य है। यदि हम स्वयं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्प नहीं लेंगे, तो यह केवल एक औपचारिकता बनकर रह

जाएगी। अतः हिन्दी को केवल दिवस विशेष तक सीमित न रखकर, इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं माता सरस्वती व महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर पुष्पार्चन से हुआ। मंगलाचरण एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजा पाठक, संचालन एवं संयोजन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया।

समाचार पत्रों में

हिन्दी भविष्य की भाषा-प्रोफेसर प्रेम नारायण सिंह

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, बी.एच.यू. में शनिवार को हिन्दी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में 'अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा के रूप में हिन्दी की प्रतिष्ठा' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि नारी शक्ति पुरस्कार प्राप्त डाक्टर नीरजा माधव ने कहा कि हिन्दी भविष्य की भाषा है तथा विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को स्थापित करने से पहले हिन्दी को अपने राष्ट्र में स्थापित करना होगा। उन्होंने कहा कि आज हमें सोचना होगा कि हिन्दी की पुनर्स्थापना कैसे हो। विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर श्रीनिवास पाण्डेय ने कहा कि आज प्रयोजनमूलक हिन्दी को ठीक से विकसित करने से यह रोजगारपरक होने के साथ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी स्थापित हो सकती है। अध्यक्षीय उद्बोधन में संस्था के निदेशक प्रोफेसर प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी की जरूरत है। सबसे पहले लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलना होगा और अपने सोच की दिशा बदलनी पड़ेगी साथ ही इसकी शुरूआत स्वयं से करनी होगी। कार्यक्रम का संयोजन डॉक्टर सुनील कुमार त्रिपाठी, मंगलाचरण डॉक्टर राजा पाठक एवं विषय परिचय प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव ने दिया। अतिथि परिचय डॉक्टर अनिल कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर राजा पाठक ने किया।

8 दैनिक जागरण वाराणसी, 15 सितंबर, 2024 वाराणसी जागरण

हिंदी को गोलबंदी व जातिवाद से बाहर लाना जरूरी

आधुनिकता के दौर में आज भी बाजार की चुनौतियों का सामना कर रही हिंदी, हुए अनेक आयोजन

हिंदी दिवस

जागरण संवाददाता, वाराणसी : हिंदी को उसका वास्तविक स्थान दिलाने की दिशा में हिंदी हितैषियों को सार्थक प्रयास करना होगा। इसके लिए गोलबंदी, पंथ और जातिवाद के जबड़े से उसे बाहर लाना होगा। ये बातें हिंदी हितैषी परिषद के तत्वावधान में बड़ा लालपुर में हिंदी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही। दिवस विशेष पर बीएचयू, आइआइवीआर समेत नगर भर में अनेक स्थानों-संस्थानों में विशिष्ट आयोजन हुए। संगोष्ठियों में राष्ट्रभाषा हिंदी को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की ध्वनि और तीव्र हुई।

बड़ा लालपुर के कार्यक्रम में प्रतिष्ठित नवगीतकार ओम धीरज के मुक्तक संग्रह सभी स्तब्ध बोलेंगे का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि चंद्रभाल सुकुमार ने व कवि डा. अशोक सिंह ने हिंदी को सरल बनाने के साथ इसके ज्यादा उपयोग पर बल दिया। कथाकार प्रकाश श्रीवास्तव, हिमांशु उपाध्याय, संयोजक डा. महेंद्र कुमार राय, लेखक ओम धीरज, सोच-विचार पत्रिका के संपादक नरेंद्र नाथ मिश्र ने हिंदी के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला। संचालन डा. कवींद्र नारायण ने किया। बीएचयू हिंदी विभाग में आयोजित कार्यक्रम में प्रो. राजकुमार ने कहा, जब तक हम अपनी भाषा को नहीं जानेंगे, दूसरी भाषा को नहीं समझ सकेंगे। प्रो. श्रीप्रकाश शुक्ल ने कहा, आज हिंदी बाजार की चुनौती का भी सामना कर रही है। प्रो. नीरज खरे ने बताया, हिंदी का जो विस्तृत समूह है वहीं उसका

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में हिंदी विभाग बीएचयू के पूर्व अध्यक्ष प्रो. श्रीनिवास पांडेय का हुआ सम्मान • जागरण

• अपनी भाषा की समृद्धि के बिना दूसरी भाषाओं को सीखना हो जाता है कठिन

सबसे बड़ा उपभोक्ता है। डा. रामाज्ञा शशिधर ने कहा कि हिंदी को हिंदी से खतरा है अंग्रेजी से नहीं। डा. प्रभात मिश्र, प्रशांत राय, आकांक्षा मिश्रा, विमलेश सरोज, अंकित मिश्र, प्रियम मिश्र ने भी अपनी बात रखी।

वसंत महिला महाविद्यालय राजघाट में प्रो मीनू अवस्थी के संयोजन में 'भाषा, साहित्य और रंगमंच' विषय पर नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमंत्री व्योमेश शुक्ल ने कहा, 'भाषा को औपचारिक और निष्प्राण होने से बचाना होगा।' हरिश्चंद्र पीजी कालेज में प्रो. सुमन जैन ने अपने विचार रखे।

अंतर विश्वविद्यालय, अध्यापक शिक्षा केंद्र में आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में मुख्य अतिथि नारी शक्ति

प्रो. सदानंद शाही को सम्मानित करती संकाय प्रमुख, डा. उत्तमा दीक्षित।

पुरस्कार प्राप्त डा. नीरजा माधव, बीएचयू हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. श्रीनिवास पांडेय, संस्था के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने अपनी भाषाई परंपरा, मेधा व क्षमता को पहचानने पर बल दिया। बीएचयू दृश्य कला संकाय में अभिव्यक्ति शोधक प्रदर्शनी व काव्य पाठ का आयोजन हुआ।

वीकएम में 'हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास' का लोकार्पण : वसंत कन्या महाविद्यालय में पुनर्नवा हिंदी साहित्य

'क' कला कैफे लंका में हिंदी दिवस पर 'कर्मभूमि' पत्रिका के 14 वें अंक का लोकार्पण करते वरिष्ठ साहित्यकार • जागरण

कर्मभूमि पत्रिका का 14वां अंक आया सामने

'क' कला कैफे लंका में 'कर्मभूमि' पत्रिका के 14 वें अंक का लोकार्पण हुआ। अध्यक्षता कर रहे राजकीय महाविद्यालय के प्रो. कमलेश वर्मा ने कहा कि 'प्रेमचंद जैसे लेखकों को हमें बार-बार याद करना चाहिए।' मुख्य अतिथि हिंदी विभाग के सह आचार्य डा. रामाज्ञा राय ने कहा कि इन दिनों हिंदी की कर्मभूमि पर कर्म कम, कर्मकांड ज्यादा हो रहा है। स्वागत वक्तव्य में संपादक प्रो. सदानंद शाही ने कहा कि 'कर्मभूमि' हिंदी की शायद एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो एक लेखक को केंद्र में रखकर अपना रचनात्मक कार्य कर रही है।' प्रो. शुचिता वर्मा, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. बलिराज पांडेय, प्रो. जाह्नवी सिंह ने अपने विचार रखे। पत्रिका में छपे लेखों के लेखक हिमांशी गंगवार, अंकित कुमार मौर्य, रोशनी धीरा, खुशबू आदि उपस्थित थे।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

निदेशक, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

संरक्षक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ.सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक आचार्य, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, सिस्टम एनालिस्ट

श्री राणा प्रताप राव, इंजीनियर हार्डवेयर

श्री विकास जानू, वेबमास्टर

श्री आनंद जायसवाल, सर्वर इंजीनियर

श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)

श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

प्रशासनिक टीम

डॉ. नन्द लाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. अनिल कुमार सिंह, एस.ओ. (प्रशासन)

श्री आनंद कुमार यादव, एल.डी.सी.

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)

डॉ. विजय कुमार राय, सहायक

सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी

सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in